पिताश्री ब्रह्मा बाबा की 18 विशेषतायें - विशेष 18 जनवरी स्मृति दिवस के उपलक्ष में

1. **एम एंड ऑब्जेक्ट की सदा स्मृति –** ब्रह्मा बाबा ने शिव बाबा द्वारा दिये गये एम एंड ऑब्जेक्ट को दृढ़ता तथा आत्मबल से सदा सामने रखा। मुझे भी अपने एम एंड ऑब्जेक्ट को सदा सामने रखना है।
2. **एकांतप्रिय –** बहुतों के बीच में रहते हुए भी बाबा ने अपना अधिक समय शान्ति और एकांत में व्यतीत किया। मुझे भी दिन में जितना भी समय मिलता है, उसमें शान्ति और एकांत का अधिक से अधिक अनुभव करना है।
3. **समानता का भाव –** बाबा की नज़र हमेशा आत्मा पर पड़ती थी। लिंग,आयु, देश, जाति इन सब बातों का भेद उनके मन में नहीं था। उनके लिए सब समान थे। मुझे भी ऐसी ही आत्म-अभिमानी स्थिति बनानी है।
4. **नथिंग न्यू का भाव और साक्षीद्रष्टा –** कुछ भी घटना घट जाये, बाबा हमेशा कहता था, नथिंग न्यू और एक साक्षीद्रष्टा की भाँति अप्रभावित रहता था। मुझे भी ड्रामा के हर दृश्य को देखते हुए ऐसी ही स्थिति में रहना है।
5. **रॉयल तथा सिम्पल –** बाबा अत्यधिक सिम्पल होते हुए भी अपने व्यवहार और व्यक्तित्व से बहुत ही रॉयल दिखाई देते थे। मुझे भी ऐसा ही राजऋषि बनना है।
6. **पवित्र विचार, शुभ भावनायें तथा पवित्र भावनायें –** बाबा कभी किसी के अवगुण नहीं देखते थे। वे सबके प्रति सकारात्मक भाव, शुभ भावनायें, पवित्र भावनायें रखते थे और इस प्रकार जीवन परिवर्तन में उनको सहयोग देते थे। मुझे भी ऐसा ही दया भरा दिल बनाना है।
7. **निमित्त भाव तथा निर्मान भाव –** बाबा को हमेशा यह स्मृति रही कि शिवबाबा उनके द्वारा कार्य करवा रहे हैं और वे केवल विनम्र इंस्ट्रूमेन्ट हैं। हमें भी यह याद रखना है कि सेवा शिवबाबा की है, वही मालिक है।
8. **न्यारा और प्यारा –** जो भी बाबा के सामने आया, बाबा ने उसको बेहद प्यार दिया परंतु फिर भी सबसे न्यारा रहा और किसी को याद भी नहीं किया। मुझे भी केवल शिवबाबा को याद करना है।
9. **स्व-सेवा और विश्व सेवा में संतुलन –** बाबा को बेहद की विश्व सेवा का सदा ध्यान रहा। लेकिन उनका ध्यान हमेशा स्व-उन्नति पर बना रहा। मुझे भी दूसरों की सेवा से पहले अपने आंतरिक बल को भरपूर करना है।

10. **बालक सो मालिक –** बाबा ने बालक बनकर दूसरों की बातें सुनी और मालिक बनकर अपने विचार दिये। मुझे भी बालक सो मालिक का स्लोगन सदा याद रखना है।
11. **अथक –** बाबा बहुत एक्टिव थे, कम खाते थे, कम सोते थे। बच्चों की दुख भरी पुकार सुनकर वे मनसा सेवा करते रहते थे। मुझे भी अपनी चेतना को जागृत करना है।
12. **शिवबाबा के साथ सर्व संबंध, एकता और ईमानदारी –** बाबा ने शिवबाबा से सर्व संबंध सच्चाई के साथ निभाये। मुझे भी योग में ऐसी ही एकरस स्थिति प्राप्त करनी है।
13. **ट्रस्टी –** बाबा अपने शरीर, मन, धन और समय के ट्रस्टी थे। उन्होंने कुछ भी अपना नहीं समझा। मैं भी अपना सब कुछ शिवबाबा को समर्पित करती हूँ।
14. **तपस्वी स्थिति –** पुरुषार्थ के प्रति बाबा का बहुत गहरा प्रेम था। उन्होंने फरिश्ता स्थिति तथा अशरीरी स्थिति का बहुत गहन अभ्यास किया। मुझे भी अपना समय ऐसे सच्चे पुरुषार्थ में लगाना है।
15. **आलराउंडर –** बाबा ने केवल मुरली ही नहीं सुनाई और केवल योग ही नहीं किया। वो सब प्रकार की सेवाओं में रुचि लेते थे। सामने आने वाली हर सेवा में मुझे भी एवररेडी रहना है।
16. **खुशनुमा चेहरा –** बाबा के चेहरे से सदा खुशी और प्रेम झलकता था। मुझे भी अपना चेहरा प्रेमस्वरूप बनाना है।
17. **बड़ा दिल और इकानामी –** बाबा का दिल बहुत बड़ा था। उन्होंने सबकी दिल पूरी की। मुझे भी कुछ भी व्यर्थ नहीं गँवाना है, सब कुछ सेवा में सफल करना है।
18. **उद्धार किया और निराश में आशा भरी –** बाबा उद्धारमूर्त थे और निराश में आश भरते थे। मुझे भी विश्व में ऐसा ही प्रकाश स्तंभ बनना है।